>

Title: Need to clean Ganga, Yamuna and other rivers in the country.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदय, कबीरदास जी की पंक्ति है, अचरज देखा भारी साधु, अचरज देखा भारी रे।

महोदय, हाल ही में मुझे मथुरा जी जाने का और द्वारिकाधीश भगवान और बांके बिहारी जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लोगों ने कहा कि वहां जमुना जी के विश्राम घाट पर भी कृष्ण के दर्शन करने के लिए जाते हैं। जब मैं विश्राम घाट पर गया तो नदी के किनारे और नदी में पानी इतना गंदा है कि आज तक पृथ्वी पर किसी ने इतना गंदा पानी नहीं देखा होगा। उसमें कीड़े तैर रहे हैं और वह गंदला पानी है और कोई उस पानी को छू नहीं सकता, कोई उसे देह पर छिड़क नहीं सकता, कोई उससे आचमन नहीं कर सकता। स्थानीय लोगों ने नदी के किनारे पानी से सटे हुए पाइप लगा दिये हैं। पाइप से छिद्र किया हुआ है और उसमें से फुहारा निकलता है। लोगों को ऐसा दिखे कि हम नदी के पानी से कुल्ला कर रहे हैं, उस पाइप से पानी लेकर देह पर छिड़कते हैं और कुल्ला करते हैं। उसे देखने के बाद हमें लगा कि देश में और प्रदेश में कोई सरकार है या नहीं।

महोदय, भगवान भी हैं या नहीं, ऐसा मुझे एक संदेह होने लगा। जिससे सभ्यता, संस्कृति बची हुई है, वह इतना गंदा पानी है। कभी नदी के किनारे भगवान कृष्ण बंसी बजाया करते थे, उस नदी की यह दुर्दशा है। सारी नालियों का पानी उसमें जा रहा है, मथुरा का यह हाल है। जहां कहते हैं कि यहां संस्कृति है, भगवान कृष्ण, बंसी वाले, गिरधारी, चक्रधारी, सुर्दशनधारी हैं, सरकार कहां है, राज्य सरकार कहां है, पर्यावरण विभाग कहां है, कहां है मैनेजमेंट, म्युनिसपैलिटी कहां है?

सभापति महोदय : रघुवंश जी, कल आपने कहा था कि तरनी, तनुजा, तट, तमाल, तरूवर बहुछाये, उसके तट पर जो तमाल के पेड़ थे, वे खत्म हो गये, इसीलिए ऐसा हुआ है।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : भारतेन्दू हरिश्चन्द्र जी ने कैसी कविता लिखी, तरनी, तनुजा, तट, तमाल, तरूवर बहुछाये, झुके फूल सो जल प्रसन्न हित मनहु सुहाये।

महोदय, तरनी, तनुजा, तरिणी सूर्य को कहते हैं और तनुजा माने लड़की। यमुना को सूर्य की लड़की लोग मानते हैं और कथा और पुराण में यह है। *तरुवर बहु छाए* - अर्थात् उनके तट पर तमाल के वृक्ष लगे हुए हैं। *झुके कूल सों जल पर सनाहित मनहुँ सुहाए* - जैसे आईना में लोग अपना चेहरा देखना चाहते हैं, उसी तरह से वह तमाल का पेड़ नदी के किनारे झुका हुआ है जिससे वह अपनी छाया पानी में देख सके। अब उस पेड़ की छाया क्या दिखेगी, उस पानी में तो कालिख पुती हुई है, कोई छाया उसमें नहीं दिखेगी। यह मथुरा में यमुना की स्थिति है। यहाँ भी दिल्ली की राजधानी से होकर 22 किलोमीटर यमुना नदी गुज़रती है। यहाँ नाली से भी बदतर उसकी स्थिति है। सुप्रीम कोर्ट की मॉनीटरिंग है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : धन्यवाद रघुवंश जी।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, यही हाल गंगा जी का है। गंगा जी का भी हरिद्वार से लेकर बनारस, कानपुर और पटना तक वही हाल है। डॉ. राम मनोहर लोहिया कहा करते थे कि नदियाँ साफ करो, नदियाँ साफ करो। सारी नदियों का यही हाल है। हमारी नदियों के किनारे सभ्यता और संस्कृति उगती है, दुनिया भर में नदियों के किनारे जंगल उगते हैं। हमारे यहाँ नदियों के किनारे सभ्यता और संस्कृति उगती है और आज उसका यह हाल है। इसमें कब सुधार होगा? सरकार के लोग यहाँ हैं। उनमें संवेदनशीलता भी है। आप देखें कि हरिद्वार में गंगाजी के लिए साधू ने प्राण त्याग दिये। अभी भी वहाँ साधू लोग अनशन पर बैठे हैं। गंगा नदी को बचाने के लिए गंगा जी को राष्ट्रीय नदी घोषित किया। गंगा और जमुना दोनों का संगम है। 'गंगा मेरी माँ का नाम, बाप का नाम हिमालय' यह हमारी संस्कृति में कहा जाता है।

'मेहमां जो हमारा होता है, वह प्राण से प्यारा होता है

मैं उस देश का वासी हूँ जिस देश में गंगा बहती है।'

गंगा और जमुना की हमारी गंगा-जमुनी संस्कृति है, उसका क्या होगा? सरकार में कुछ संवेदनशीलता नहीं है, यह सरकार क्या करेगी? इनको जानकारी में है या नहीं, इनके एक्शन प्लान में है या नहीं, इनके एजेन्डा में है या नहीं, यह मैं जानना चाहता हूँ। सरकार की हिम्मत है तो बताए, नहीं तो इसमें संघर्ष अवश्यम्भावी है, युद्ध होगा और लड़ाई के सिवाय हमें कोई दूसरा रास्ता दिखाई नहीं देता है। ...(व्यवधान) वहाँ लोग कलेजा पीट रहे हैं, कैसे वहाँ सफाई होगी, कैसे उस गंदे पानी में आदमी जाते हैं। देश भर के लोग तीर्थ यात्रा करने जाते हैं। क्या हालत है? कौन देखने वाला है? कहाँ राज्य सरकार और कहाँ पर्यावरण? ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : रघुवंश जी, समय की कमी है। प्राइवेट मैम्बर्स बिल भी लेना है।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : सरकार में कोई संवेदनशीलता नहीं है। मैं आश्चर्यचकित हूँ।

सभापति महोदय : श्री पी.एल.पुनिया, श्री महेन्द्र सिंह पी. चौहान, श्री जयन्त चौधरी और श्री रमेन डेका के नाम डॉ.रघुवंश प्रसाद सिंह द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध किये जाते हैं।